हरिभूमि

रायपुर - संस्कारधानी भूमि

20 Apr 2023

संगीत विवि की उपलब्धि, दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में विषय विशेषज्ञों ने रखे विचार

पहली बार छत्तीसगढ़ी लोक कलाकारों पर समग्र संवाद

हरिभूमि न्यूज ⏭ सीरागढ़

राष्ट्रीय सांस्कृतिक अस्मिता में छत्तीसगढ़ी लोक कलाकारों की भूमिका पर इंदिरा कला संगीत विवि में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई। लोकसंगीत विभाग और कला संकाय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी सीएम के सलाहकार विनोद वर्मा के मुख्य अतिथ्य और कुलपति पद्मश्री ममता चंद्राकर की अध्यक्षता में हुआ जिसमे राष्ट्रीय स्तर के विषय-विशेषज्ञों ने अपने विचार रखा, लगभग दर्जन भर शोधपत्रों का वाचन हुआ।

साहित्यकार व लोक कला मर्मज्ञ डॉ पीसी लाल यादव ने पंडवानी के प्रतिनिधि कलाकार झाड़ूराम देवांगन, पद्मश्री पूनाराम निषाद पर केन्द्रित वक्तव्य दिया।

छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य नाचा गम्मत के पुरोधा रामचंद्र देशमुख, दाऊ दुलार सिंह मंदराजी, दाऊ महासिंह चंद्राकर द्वारा राष्ट्रीय सांस्कृतिक अस्मिता को लेकर उनकी भूमिका पर लोक कलाकार दीपक चंद्राकर और डॉ.जीवन यदु ने विस्तार से प्रकाश डाला। भरथरी की प्रतिनिधि गायिका सुरूजबाई खांडे, पंथी के प्रसिध्द कलाकार देवदास बंजारे पर समीक्षक व साहित्यकार डॉ. विनय कुमार पाठक और छग राजभाषा आयोग सचिव डॉ. अनिल कुमार भतपहरी ने विस्तार से बात रखी।

भरथरी के साथ स्टुडेंट्स ने दी प्रस्तुति

संगोष्ठी में सुप्रसिध्द रंगकर्मी पद्मभूषण हबीब तनवीर और उनके नाचा कलाकारों मदन निषाद, लालूराम, पद्मश्री गोविंदराम निर्मलकर, फिदाबाई मरकाम पर साहित्यकार प्रो. रमाकांत श्रीवास्तव और संगीत विवि लोक संगीत और कला संकाय के अधिष्ठाता डॉ. योगेन्द्र चौबे ने विस्तार से चर्चा की। प्रदेश के प्रमुख लोक साहित्य पर हिंदी विभागाध्यक्ष और दृश्यकला संकाय के अधिष्ठाता प्रो डॉ राजन यादव ने विस्तार से वक्तव्य दिया। संगोष्ठी का समापन कुलपति पद्मश्री ममता चंद्राकर के मुख्य आतिथ्य व प्रो काशीनाथ तिवारी की अध्यक्षता और कुलसचिव प्रो डॉ आईडी तिवारी के विशिष्ट आतिथ्य में हुआ। निष्कर्ष अभिव्यक्ति प्रो डॉ रमाकान्त श्रीवास्तव ने दी। अधिष्ठाता डॉ. योगेन्द्र चौबे के संयोजन और सहप्रा डॉ. दीपशिखा पटेल के सह-संयोजन में संपन्न इस संगोष्ठी मे विभाग के स्टुडेंट्स और भूपेन्द्र साहू के निर्देशन में भरथरी की प्रस्तुति हुई। विवि में यह पहला अवसर था जब छत्तीसगढ़ी लोक कलाकारों की राष्ट्रीय अस्मिता को लेकर उनके उल्लेखनीय सांस्कृतिक अवदान पर समग्र रूप से चर्चा हुई। इस दौरान डॉ बिहारी तारम, डॉ. नत्थू तोड़े, डॉ. परमानंद पांडेय, डॉ. विद्या सिंह राठौर, मनोज डहरिया सहित शोधार्थियों और विद्यार्थियों ने संगोष्ठी का सफल बनाया।